International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-06-2024, Accepted: 26-06-2024, Published: 17-07-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 26-28

नेपाल की व्यवस्था में चीन के हस्तक्षेप से भारत–नेपाल संबंध पर पड़ने वाले प्रभाव का समालोचनात्मक परीक्षण

डॉ. शिव हर्ष सिंह[1], सुरज कुमार[2]

[1] शोध निर्देशक (सह आचार्य) राजनिति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. महाविधालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. महाविधालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सांराश

नेपाल एक भू–आबद्ध देश है। जो अभी संक्रमणकाल के दौर से गुजर रहा है। इसमें उपर से दो क्षेत्रीय शक्तियों का दबाव भी है, चीन व भारत जो एक–दूसरे को प्रतियोगी मानते हैं। परंतु नेपाल एक का प्रयोग दूसरे के खिलाफ, बारी–बारी से करके अधिकतम लाभ लेने की कोशिश करता है। चीन जो कि संभावित महाशक्ति है नेपाल को अपने पक्ष में करके भारत के लिए एक चुनौती पेश कर रहा है। भारत को इस चुनौती से निपटने के लिए नेपाल से अपने संबंधों को और मधुर करने की आवश्यकता है।

मूलशब्द: नेपाल, भारत, चीन

एशिया महाद्वीप में भारत व चीन जैसे विशाल राज्यों के मध्य स्थित नेपाल जनसंख्या एवं भू–भाग की दृष्टि से एक छोटा सा राज्य है। उसका कुल क्षेत्रफल 1,47,181 वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या लगभग 27 करोड़ है। नेपाल की राजभाषा नेपाली तथा राजधानी काठमांडू है। नेपाल की अर्थव्यवस्था कृषि पर अधारित है। तथा राज्य के 76 प्रतिशत लोग कृषि कार्य से जुड़े हैं।

नेपाल सन् 2008 तक विश्व का एक मात्र हिन्दू राष्ट्र रहा परंतु नई संविधान में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया। आधुनिक नेपाल के जनक पृथ्वी नारायण शाह का कथन था "मेरा देश चार वर्ण और 36 जातियों की फुलवारी हैं।"

नेपाल, भारत व चीन के बीच एक बफर राज्य है। एकीकृत नेपाली राज्य के संस्थापक पृथ्वी नारायण शाह (1723–1775) ने अपने उतरधिकारियों को, चीन या अंग्रेज दोनों में से किसी भी देश के साथ उलझने से बचने का सुझाव दिया था। उनका विचार था कि यदि ऐसा संभव न हो तो दोनों शाक्तियों से एक–दूसरे के विरूद्ध लाभ उठाना चाहिए। नेपाल ने कुछ सफलताओं के साथ इसी रणनीति को अपनी विदेशनीति के रूप में अपनाया और यह देखना महत्वपूर्ण है कि नेपाल स्वयं की अंग्रेजी उपनिवेश बनने से बचाने में सफल रहा। नेपाल की सरकार भी इसी राजनीति को अपनाकर अपना हित साधने में लगीं है।

अध्ययन पद्धति

इस शोध पत्र हेतु ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक अध्ययन पद्धति के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषण किया गया है। राजनीतिक एवं सामरिक दृष्टि से प्रपत्र को अध्ययन का प्रयास किया गया है।

भारत–नेपाल संबंधों का सुनहरा अध्याय

नेपाल भारतीय उपमहाद्वीप का एक भाग है तथा यह स्थली से घिरा हुआ देश हैं। भारत नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के संबंधों की विशिष्टता है जिसमें दोनों देशों के लोगों को आवागमन में सुगमता रहती है। दोनों देशों के बीच 1850 किलोमीटर से अधिक लंबी सझा सीमा है जिसमें भारत के पाँच राज्य– सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड से जुड़े है।

31 जुलाई 1950 को भारत और नेपाल ने शांति व मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर किया। यह संधि दोनों देशों के बीच लोगों और वस्तुओं की मुक्त आवाजाही और रक्षा एवं विदेशी मामलों के बीच घनिष्ठ संबंध तथा सहयोग की अनुमती देता है।

भारत व नेपाल हिन्दू धर्म एवं बौद्ध धर्म के संदर्भ में समान संबंध साक्षा करते है। भारत व नेपाल दोनों आरंभ से ही शांतिप्रिय देश रहे हैं। डा० एम० एस० राजन के शब्दों में "भाषा, धर्म, देवताओं और भोजन के मामले में कोई भी देश भारत के उतना करीब नहीं है जितना की नेपाल"। दोनों देशों के नागरिकों के बीच आजीविका के साथ–साथ विवाह और परिवारिक संबंधों की मजबूत नींव है। इस नीवं को ही 'रोटी–बेटी का रिश्ता' का नाम दिया गया है। स्वतंत्रता के बाद, विशेष रूप से चीन में साम्यवादी क्रांति और चीन के तिब्बत पर नियंत्रण स्थापित करने के बाद भारतीय विदेश नीति में नेपाल के सामरिक महत्व पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

नेपाल–चीन संबंध की वर्तमान स्थिति

नेपाल के उत्तर में हिमालयन रेंज में नेपाल और चीन 1414 किलोमीटर सीमा साझा करते है। माना जाता है कि दोनों देशों के बीच संबंध पांचवी शताब्दी से ही रहे हैं। दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंध 1955 में स्थापित हुए थे। नेपाल के साथ चीन का जुड़ाव नया नही है। लेकिन उनके इस जुड़ाव को धार मिला जब नेपाल मई 2017 में चीन के महत्वकांक्षी परियोजना 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) पर हस्ताक्षर किया। चीन ने इस विशाल परियोजना की शुरूआत वर्ष 2013 में किया था इस समय उसका नाम 'वन बेल्ट, वन रोड (OBOR) था जिसको बाद में नया नाम 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव कर दिया गया।

इस परियोजना के माध्यम से चीन अपने हितों की पूर्ति के लिए क्षेत्रीय एकीकरण में सुधार, वाणिज्य में वृद्धि और चीन अपने आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एशिया को अफ्रीका, यूरोप के साथ भूमि और समुद्री नेटवर्क से जोड़ना चाहता है। भारत नेपाल पर इस परियोजना में शामिल न होने का दबाव डाल रहा था। यह नेपाल को अच्छा नहीं लगा जिससे भारत की 'बिग ब्रदर' वाली छवि स्थापित हुई।

चीन के खर्च पर नेपाल की कई स्कूलों में मंदारिन भाषा पढ़ाया जा रहा है।

हाल के वर्षों में, नेपाल ने चीन के साथ व्यापार और परिवहन क्षेत्र में कई समझौते किए है जिसमें प्रमुख है अन्य देशों के साथ

व्यापार के लिए नेपाल को चीनी बंदरगाहों का उपयोग, तेल पाइप लाइन के माध्यम से संयोजन, विशेष आर्थिक क्षेत्र की स्थापना आदि।

भारत–नेपाल के बीच सहयोग के क्षेत्र

- बुनियादी ढाँचा भारत ने नेपाल को अरूण–3 पनबिजली परियोजना के लिए 1236 करोड़ रुपए का निवेश किया। अरूण–3 हाइड्रो इलेक्ट्रिक (जल विद्युत) परियोजना (900 मेगावाट) पूर्वी नेपाल में अरूण नदी पर स्थित एक रन–ऑफ रिवर है। अरूण–4 के लिए थी दोनों देशों के बीच समझौता हुआ है।
- जयनगर (बिहार) से कुर्था (नेपाल) तक 35 किलोमीटर के क्रॉस–बार्डर रेल लिंक के संचालन को मंजूरी मिली है। मोतीहारी–अमलेखगंज 69 किलोमीटर लंबे पाइप लाइन की मंजूरी। इसके साथ नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में शामिल हो गया है।
- भारत नेपाल को अंतर्देशीय जलमार्ग से जोड़ने के लिए सागर (हिंद महासागर) के साथ सागरमाथा (माउंट एवरेस्ट) परियोजना लाया है।

व्यापार

भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है वर्ष 2022–23 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा छत्रै 1134.53 विलियन से अधिक हो गई जिसमें भारत से आयात छच्त्र 1027.84 बिलियन और भारत को निर्यात छच्त्र 106.69 बिलियन से अधिक है।

रक्षा सहयोग

नेपाली सेना का आधुनिकीकरण, भारतीय सेना की गोरखा रेजीमेंट का गठन। वर्ष 2011 से भारत–नेपाल के बीच 'सूर्यकिरण' के नाम से सैन्य अभ्यास हो रहा है।

बहुपक्षीय साझेदारी

भारत और नेपाल सार्क (दक्षिण एशियार्ड क्षेत्रीय सहयोग संगठन) जिसका मुख्यालय काठमांडू में है। बिम्सटेक (बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टीरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक को–ऑपरेशन) बीबीआईएन (बांगलादेश,भूटान, भारत और नेपाल) जैसे कई बहुपक्षीय मंचों को साझा करते है।

सांस्कृतिक संबंध

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के साथ पारंपरिक संबंधों को मजबूत करने के लिए तीन जुड़वा शहरों को विकसित किया जाएगा। जिसमें अयोध्या से जनकपुर, लुम्बिनी से बोधगया तथा वाराणसी से काठमांडू है। इसके साथ ही भारत और नेपाल के बीच 'पीपुल टू पीपुल' कनेक्टिविटी से दोनों देशों के संबंध प्रगाढ़ हुए है।

भारत–नेपाल के संबंधों में विवादित बिंदु

- **काला पानी क्षेत्र का विवाद**: यह 370 वर्ग किमी० का क्षेत्र है। यह भारत, नेपाल एवं चीन सीमा पर स्थित है। वर्ष 1816 में गोरखा नरेश और अंग्रेजों के बीच 'शुगौली की संधि' हुई थी तब से यह ब्रिटिश नियंत्रण में था वर्तमान में इस क्षेत्र पर भारत का नियंत्रण है। परंतु नेपाल द्वारा इस पर अपने दावे किए जाने के कारण यह क्षेत्र विवादित हो गया है। वर्ष 2019 में नेपाल ने उत्तराखण्ड के कालापानी लिंपियाधुरा और लिपुलेख और सुस्ता के क्षेत्र को नेपाल के क्षेत्र के हिस्से के रूप में दावा करते हुए एक नया राजनीतिक मानचित्र जारी किया। जिस पर भारत ने आपत्ति जाहिर की।
- **मधेशी समस्या**: नेपाल में पहाड़ी और तराई क्षेत्रों के मध्य क्षेत्र को ही मधेशी क्षेत्र कहा गया। इसकी सीमा भारत के साथ मिलती है। नेपाल की जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा इस भाग में निवास करता है। मधेशी मैथिली, भोजपुरी एवं हिंदी भाषा बोलते हैं। इसिलिए इनके सांस्कृतिक और वैवाहिक संबंध भारतीयों से है। मधेशियों के अनुसार, मधेशी क्षेत्र का विकास नेपाल के पहाड़ी क्षेत्र की तुलना में अत्यधिक कम हुआ है जिसके कारण ये समय–समय पर अपने अधिकारों की मांग करते रहते है। नेपाल–सरकार मधेशियों को भारत समर्थक मानती है। नेपाल का कहना है कि मधेशियों को भारत उकसाता है।

- **शांति और मैत्री संधि, 1950**: इस संधि पर हस्ताक्षर नेपाल के महाराजा मोहन शमशेर जंग बहादुर राणा तथा भारत के राजदूत चंदरेशवर प्रसाद सिंह ने किया था। इस संधि के प्रावधान के अनुसार–दोनों देश किसी विदेशी आक्रमण के समय एक–दूसरे की रक्षा करेंगे। सामान्य रूप से नेपाल अपने लिए युद्ध सामग्री भारत से खरीदेगा तथा किसी अन्य देश से युद्ध सामग्री खरीदने से पहले नेपाल, भारत से परामर्श करेगा। लेकिन नेपाल आज इसे एक असमान और भारतीय प्रभाव थोपने के एक संकेत के रूप में देखता है। नेपाल अपने संप्रभुता के लिए इसे चुनौती समझता है।

भारत–नेपाल संबंधों को सुदृढ़ करने के कुछ उपाय

- नेपाल में चीन की परियोजनाओं के क्रियान्वयन की तुलना में, भारत द्वारा नेपाल में विभिन्न परियोजनाओं के क्रियान्वयन में अधिक विलम्ब के कारण भारत के प्रति नेपाल में अविश्वास का महौल है। अतः भारत ने जो भी परियोजना नेपाल के विकास के लिए शुरू किया है उसे यथाशीघ्र पूरा करें।
- वर्ष 1975 में सिक्किम का भारत में विलय हुआ। जिसके बाद चीन कहने लगा कि अगला नंबर अब नेपाल का है जबकि भारत कभी भी विस्तारवादी नीति नहीं अपनाया है। चीन की मंशा है सम्राज्यवादी नीति की। अतः भारत को नेपाल के सामने चीन वास्तविक मंशा ऊजागर करना चाहिए। 2014 में भारत द्वारा शुरू की गई 'पड़ोसी प्रथम' नीति द्वारा भारत–नेपाल संबंधों को और प्रगाढ़ करना चाहिए।
- क्षेत्रीय विवादों के संदर्भ में क्षेत्रीय राष्ट्रवाद पर बयानबाजी से बचने एवं शांति से बातचीत करने के लिए ठोस आधार तैयार करना चाहिए।
- नेपाल को भी अपने देश में लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करना चाहिए। चुंकी भारत एक लोकतांत्रिक देश है वह शुरू से लोकतंत्र का समर्थन करता आ रहा है जबकि चीन एक साम्यवादी देश है अतः नेपाल को भी संबंधों में यह तय करना होगा कि भारत व चीन के बीच कौन उसके भविष्य के लिए ज्यादा हितैषी होगा।

निष्कर्ष

- भारत–नेपाल के बीच खुली सीमा होने के कारण नेपाल का महत्व भारत के लिए कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। उनमें सबसे पहले चीन के हस्तक्षेप से सामरिक दृष्टि से, आतंकवाद की समस्या, नक्सलवाद की समस्या, मानव तस्करी, मादक पदार्थो की तस्करी। भारत को इन समस्याओं से निपटने में नेपाल का सहयोग आवश्यक है।

नेपाल, भारत व चीन दोनों से समान दूरी के सिद्धांत पर संबंध स्थापित करना चाहता है लेकिन भारत–नेपाल से विशिष्ट संबंध स्थापित करना चाहता है अतः भारत को अपने नीतियों में और खुलापन लाना होगा ताकि वह चीन को प्रसंतुलित कर सके।

संदर्भ सूची

1. MUNI SD. foreign policy of Nepal." Adroit Publishers, 2016.
2. Krishnan Ananth. India's China Challange, 2020.
3. HarperCollins Publishers.
4. Rae Ranjit. Kathmandu Dilemma" Penguin Random House India, 2021.
5. मीना, कुमार, राकेश, डॉ० "नेपाल का संवैधानिक विकास" प्रभात प्रकाशन।